बाल भवन बालिका विद्यापीठ

लखीसराय

दिनांक:- 1 जून 2020

कक्षा:-4

सरकस

होकर कौतूहल के बस में,

गया एक दिन मैं सरकस में।

भय–विस्मय के काम अनोखे,

देखे बहु व्यायाम अनोखे।

एक बड़ा-सा बंदर आया,

उसने झटपट लैंप जलाया।

डट कुर्सी पर पुस्तक खोली,

आ तब तक मैना यों बोली।

हाजिर है हुजूर का घोड़ा,

चौंक उठाया उसने कोड़ा।

आया तब तक एक बछेरा,

चढ़ बंदर ने उसको फेरा।

एक मनुष्य अंत में आया,

पकड़े हुए सिंह को लाया।

गृहकार्य

उपर्युक्त कविता को पढ़े और याद करें।